International Journal of Applied Research 2015; 1(13): 526-529

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(13): 526-529
www.allresearchjournal.com
Received: 20-10-2015
Accepted: 23-11-2015

डॉ. नलिनी खे. टेंभेकर
सहयोगी प्राध्यापक (इतिहास)
शासकीय विदर्भ ज्ञान विज्ञान संस्था, अमरावती

Correspondence
डॉ. नलिनी खे. टेंभेकर
सहयोगी प्राध्यापक (इतिहास)
शासकीय विदर्भ ज्ञान विज्ञान संस्था, अमरावती

भोसले शासन काल में नागपूर की आर्थिक स्थिती (1730–1854)

डॉ. नलिनी खे. टेंभेकर

सारांश भोसले शासकों की सत्ता का केंद्र नागपूर था। रघुजी प्रथम के काल में बंगाल और कर्नाटक से संपत्ती का प्रवाह नागपूर की ओर आने से राज्य में आर्थिक समृद्धी थी। जानोजी के काल में माधवराव पेशवा द्वारा नागपूर लुटे जाने से और मुधोजी के शासन काल में हुए प्रथम आंग्ल–मराठा युद्ध के परिणाम स्वरूप राज्य की आर्थिक स्थिती शोचनिय थी। दुसरे रघुजी के शासन काल में आय में बढोतरी हुई लेकीन नित्य के सैनिक अभियान और रघुजी द्वितीय के खर्चीले स्वभाव से खजाना रिक्त रहा। रघुजी के शासनकाल मे हुए द्वितीय आंग्ल–मराठा युद्ध में हुई पराजय के परिणाम स्वरूप राज्य की आय आधी रह गयी।
1803 से 1818 का काल राज्य के लिये आर्थिक अस्थिरता का काल था। 1826 तक राज्य की वास्तविक सत्ता रेसिडेंट जेन्किन्स के हाथ में थी। 1826 मे रघुजी के बालीग होने पर राज्य की सत्ता उसे सौंपी गयी। उसने बढे हुये कर्जे को कम कर आर्थिक सुधार लाने हेतू प्रयास किये। परंतु कालांतर में रेसिडेंट के अत्याधिक हस्तक्षेप से शासन की और उसने ध्यान देना छोड दिया परिणाम स्वरूप राज्य की आय और व्यय में अंतर बढने लगा।
राज्य की आयात–निर्यात, व्यापार–व्यवसाय की प्रगती, कृषी उत्पादन, कपडा उद्योग, मजदुरी के दर, टकसाल व्यवस्था आदी पर प्रस्तूत लेख में प्रकाश डाला गया है।

कुट शब्द सहाय्यक सन्धी, चौथाई, मोकासा, रब्बी, खरीप, पिंढारी, पेढी, टकसाल, रत्ती, तोला

प्रस्तावना भोसले शासक मराठा मंडल के महत्वपूर्ण सदस्य एवंम सरदार थे नागपूर उनकी सत्ता का केंद्र था। मराठा राज्य के विस्तार में उन्होने मुख्य भुमिका निभाई। छत्रपती शाहूने 1707 में परसोजी भोसले को 'सेना साहेब सुभा' यह पद देकर वऱ्हाड–गोंडवण प्रांत पर वंशपरंपरागत अधिकार (सनद) दिया। इस वंश में क्रमश कान्होजी भोसले, रघुजी प्रथम (1738 से 1755) जानोजी भोसले (1761 से 1772), मुधोजी भोसले (1772–1788) रघुजी द्वितीय (1788–1816), अप्पासाहेब भोसले (1817) तृतीय रघुजी भोसले (1818–1853) ऐसे शासक हुए। इस वंश के रघुजी प्रथम ने नागपूर को अपना केंद्रस्थान बनाकर पूर्व में बंगाल तक अपने राज्य का विस्तार किया। इ.स. 1800 में भोसले शासकोंकी सत्ता उत्तर में नर्मदा तक दक्षिण में गोदावरी, पश्चिम मे बरार तो पूर्व में सागर किनारे (बंगाल) तक विस्तारीत थी। 1804 से ब्रिटीशों का चंचूप्रवेश इस राज्य में हुआ और धिरे–धिरे उन्होने अपना प्रभाव जमाना शुरू किया। द्वितीय आंग्ल मराठा युद्ध में रघुजी द्वितीय की पराजय होकर उन्हे अंग्रेजो के साथ देवगाव की सन्धी (16 दिसंबर 1803) करनी पडी और अपना आधा राज्य गवाँना पडा। रघुजी द्वितीय की मृत्यु के पश्चात भोसले दरबार में निर्माण हुए अंतर्गत कलह का लाभ उठाकर रेसिडेंट जेन्किन्स ने अप्पासाहेब के साथ सहाय्यक सन्धि (28 मे 1816) की। और ब्रिटीशोंका हस्तक्षेप इस राज्य में बढता गया अंत में रघुजी तृतीय का कोई उत्तराधिकारी नही होने का कारण देकर डलहौजी ने (12 माार्च 1854) इस राज्य का ब्रिटीश साम्राज्य में विलय कर लिया।
नाना फडणविस ने अपने वार्ताहर मराठा साम्राज्य में हर जगह नियुक्त किये थे। सदाशिव गुणे, शिवराम सदाशिव गुणे, मल्हारजी वोरपे, दत्ताजी तोडरमल यह नाना के प्रतिनिधी नागपूर में भोसले दरबार में थे। वे भोसले राजाओंकी दिनचर्या और नागपूर दरबार के दैनिक घटनाक्रम की जानकारी पूणे दरबार में नाना फडणविस को भेजते थे। वे पत्र तत्कालीन नागपूर के आर्थिक जीवन पर प्रकाश डालते है।
रघुजी प्रथम को छत्रपती शाहू से 1738 में मिली सनद के तहत 1) लखनौ 2) मकसुदाबाद 3) बेदर 4) बंगाल 5) बितिया 6) बुंदेलखंड 7) इलाहबाद 8) हाजीपूर 9) पटना इसके साथ ही देवगड, गढा, भंवरागढ, चांदा इन प्रदेशों में चौथाई और मोकासा वसूल करने का अधिकार मिला था। रघुजी प्रथम ने अर्काट व त्रिचन्नापल्ली जीत लिया था और बंगाल में भी आलिवर्दी खान को 1751 में रघुजीसे

सन्धी करनी पडी थी। रघुजीने ओरिसा, बंगाल–बिहार प्रांत पर अपना प्रभाव निर्माण किया था। रघुजीने चांदा संस्थान को अपने राज्य में मिला लिया था और छत्तीसगड पर भी अपना प्रभुत्व स्थापित किया था। पूर्व की और सत्ता विस्तार के कारण वह नागपूर में वास्तव्य करने लगा।

आर्थिक स्थिती रघुजी प्रथम के काल में बंगाल और कर्नाटक से संपत्ती का प्रवाह नागपूर की और आता था। रघुजी की मृत्यु के पश्चात (1755) जानोजी के काल में राज्य की आर्थिक स्थिती दुर्बल हुई। 1765 में जानोजीके पास अपने सैनीकों का वेतन देने हेतू पैसा नही था इसलिए सैनिकोंने धरना दिया था। [1] 1769 में माधवराव पेशवा ने जानोजी भोसले को सबक सिखाने हेतू (रघुनाथराव का समर्थक होने के कारण) नागपूर शहर को लुटा। इससे खजाना रिक्त हो गया, उसी समय अकाल पडने से महगांई बढी।[2] पहले आंग्ल–मराठा युद्ध के खर्चे का भार भी तिजोरी पर पडा। मुधोजी के काल में जॉर्ज फॉस्टर अपनी 11 अप्रैल 1788 की रिपोर्ट में लिखता है की, राज्य की स्थिती शोचनीय है। राजस्व कुल 59 लाख रूपये होकर उनमे से 16 लाख रूपये देनदारी में ही खर्च हो जाते है। दुसरे रघुजी के शासन काल में (1788 से 1816) राज्य की आय में बढोत्तरी हुई। लेकीन 20 अगस्त 1790 की अपनी रिपोर्ट में लिखता है की छत्तीगड और ओरीसा को मिलकर नागपूर राज्य की आय 70 लाख रूपये वार्षिक है। लेकीन नित्य के सैनिकी अभियानों से खजाना जल्द ही रिक्त हो जाता था। उपरसे रघुजी द्वितीय खर्चिले स्वभाव का था। उसने अनेक मंदिर, तालाब, बगीचे आदी का निर्माण कार्य शुरू किया साथ ही अलंकार, हाथी, घोडे की खरीददारी भी वह बडे पैमाने पर करता था। उसकी इस प्रवृत्ती का असर खजाने पर पडने लगा। अपने खर्चे को पुरा करने के लिये उसने प्रजा पर अधिक कर लगाये। साहुकारों से बडी–बडी रकम वसूल की इससे साहुकार गरीब हो गये। [3] सेना का वेतन रुका हुआ था। उनकी एक करोड रूपयों की देनदारी थी। इसके साथही पिंढारियों के आक्रमण और लुट से खजाने पर भार पडने लगा। [4] 1796 में हौशंगाबाद, 1797 में गढामंडला व 1799 में चौरागड यह प्रदेश जीत लेने से राज्य की आर्थिक स्थिती सुधरी और इ.स. 1800 में नागपूर राज्य की आय कुल मिलाकर 111 लाख रूपये हुई। [5] इ.स. 1803 के द्वितीय अग्रेंज मराठा युद्ध में मिली पराजय के परिणामस्वरूप देवगाव की सन्धी के तहत पूर्व में ओरिसा और बलसोर प्रांत और पश्चिम में कपास उगानेवाले बरार पर अंग्रेजो का अधिकार हो गया और राज्य की आय घटकर 60 लाख रूपये रह गयी। खजाना रिक्त हो गया। पिंढारियो के बार–बार होनेवाले आक्रमणों ने भी राज्य की आर्थिक स्थिती को दुर्बल किया।

1803 से 1818 का काल राज्य के लिये आर्थिक अस्थिरता का काल था। सीताबर्डी के युद्ध में अप्पासाहेब की पराजय और पदच्यूती के पश्चात अल्पवयीन रघुजी तृतीय को नागपूर की गद्दी पर बिठाया गया और राज्य की संपुर्ण सत्ता रेसिडेंट जेन्किन्स के हाथ में निहीत हो गयी। उसके अच्छे प्रशासन से राज्य की स्थिती में सुधार हुआ। 1826 में रघुजी के बालीग होने पर राज्य की सत्ता उसे सौंपी गयी उस समय राज्य की तिजोरी में 36 लाख रूपये थे। इस समय कुछ प्रदेश अंग्रेजो के अधिकार में जाने से राज्य की आय में कमी आयी थी। [6] रेसिडेंट वाईल्डर ने 6 दिसंबर 1828 को राज्य के बारे में लिखा की ''राज्य की आर्थिक स्थिती समाधानजनक होकर राजा का प्रशासन उत्तम है। विशेषकर पोलीस यंत्रणा कार्यकुशल है ओर सर्वत्र शांती है। [7] 1834 के बाद राजा और रेसिडेंट ब्रिग्ज के संबंध अच्छे नही रहे और राजाने राज्यकार्य में ध्यान देना छोड दिया परिणामस्वरूप राजस्व की वसूली कम हुई। आय कम और व्यय ज्यादा होनेसे राजा को कर्ज लेना पडा रघुजी को कंपनी को हर साल 8 लाख रूपये की खंडणी देना भी भारी पडने लगा। दिनोदिन राजा की आर्थिक स्थिती बिघडने लगी। रेसिडेंट कॅव्हेन्डिश ने राजा को खर्चा कम करके आर्थिक स्थिती सुधारने की सलाह दी तब राजा ने खर्चे में कटौती की। [8]

नागपूर राज्य का राजस्व करीब 48 लाख था। 1818 से 1830 के बीच जब नागपूर प्रांत ब्रिटीश नियंत्रण में था तब आय से व्यय दो लाख से कम था। बाद में राजस्व कम होने से पहले से खर्च बढ गया। 1839 में कुल वसूल हुआ राजस्व 46,06,092 रूपये 6 आणे, 5-½ पैसे था और खर्च 53,27,042 रूपये 3 आणे 4 पैसे हुआ, याने कुल आय से करीब 7-½ लाख रूपये खर्चा अधिक हुआ। परंतु यह ज्यादा खर्च राजा की सेवा में नियुक्त भ्रष्ट व्यक्तीयों के झुठा हिसाब देने से हुआ यह बात सामने आने से राजाने अपने खर्चे मे कटौती की। 1841 में कुल 48,66,874 रूपये 14 आणे 5 ¾ पैसे राजस्व वसूली हुई और खर्च आय से केवल 55 हजार छह सौ चौऱ्याशी रूपये 4 आणे 11.¼ पैसे ज्यादा रहा। करीब 6-½ लाख रूपये की बचत कर खर्चे को कम किया गया। 1841 से 1845 में राजाने खुद ध्यान देकर कर्जे को समाप्त किया और व्यय को आय से कम किया। इसके लिये उसे हर विभाग भी सुक्ष्मतर बातोंमे व्यक्तिगत तौर पर ध्यान देना पडा। सहाय्यक संन्धि हेतू प्रतिवर्ष 8 लाख रूपये भी वह कंपनी को नियमित रूप से देता था। उसने यह रकम कम करवाने हेतू प्रयास किये। परंतू गव्हर्नर जनरल ने उसे मान्य नही किया। [9]

1844 मे राजा गंभीर रूप से बिमार हुआ। इस समय स्पियर्स रेसिडेंट के पद पर नियुक्त हुआ था। बिमारी से उठने के पश्चात रेसिडेंट के राज्य में अत्याधिक हस्तक्षेप से खुदका कोई पुत्र नही होने से और शराब की लत लगने से रघुजी तृतीय का ध्यान शासन से हट गया। इसके अर्थव्यवस्था पर गंभीर परिणाम हुए। 1844 में राज्य की आय 50,82,304 रूपये थी। उसमें मुख्य रूप से जमीन महसूल से आय कुल 37,01,581 रूपये और खर्चा 55,76,553 रूपये था और 19,75,972 रूपये कर्जा था। इ.स. 1853 में कुल आय 49,08,141 और खर्चा 50,53,914 रूपये था और कर्जा 1,45,773 रूपये था। इ.स. 1854 मे कुल आय 48,53,151 और खर्चा 50,53,914 था। उस समय 20,07,63 रूपये कर्जा हुआ। [10]

मजदुरी इस समय एक कुशल कामगार को ढाई से तीन पैसे एक दिन की मजदूरी मिलती थी। साधारण मजदूर को दो पैसे मिलते थे। खेत में काम करनेवाले मजदुरों को महिने के अंत में 5 कुडव (40 पायली) याने 50 सेर अनाज और दो रूपये दिये जाते थे। नागपूर शहर में मजदूरी एक तृतीयांश ज्यादा थी। खेती में हल चलाने वाले को ढेड पायली, जानवरों को चराने वाले को एक पायली अनाज रोज दिया जाता था। खेती संबधी बाकी काम करार करके दिये जाते थे। वेतन का प्रमाण कम ज्यादा था। 1800 से 1825 के बीच पैसे की कीमत बढने से 1800 में जीस मजदूरी के लिए एक पैसा मिलता था उसी काम के लिए 25 साल बाद तीन पैसे मिलने लगे। लेकीन वास्तव में यह बढोत्तरी नाममात्र की ही थी। तांबे के सिक्कों की किमत में आयी गिरावट का यह परिणाम था। 1803 में और उसके पहले के काल में रूपये के चालीस पैसे होते थे। 1725 में यह किंमत अठ्ठावन्न या साठ तक निचे आयी थी उसी का यह परिणाम था। ब्रिटीशोनें अपने हात में शासन लिया। उसके पहले के दो दशकों में अनाज महंगा था। इसलिये बढे हुए वेतन का मुजरोंको कुछ लाभ न मिल सका। अनाज की किमतें कम होने पर स्थिती में कुछ फर्क पडा। [11]

कृषी खेती यह नागपूर राज्य का प्रमुख व्यवसाय था। उत्पादन के आधार पर जमीन का वर्गीकरण किया गया था। (1) खरीफ (बरसाती) (2) रब्बी (गर्मी) और बागायती खेती की जाती थी। काली, भुरी, और लाल (छोटे पत्थर मिश्रीत) प्रकार की जमीन थी। खरीप में धान यह मुख्य अनाज था। उसका उत्पादन वैनगंगा (भंडारा) चांदा ओर छत्तीगड प्रांत में होता था। इसके साथ ही ज्वार, तुअर, कुटकी आदी का उत्पादन होता था। रब्बी में गेंहूँ, चना, जवस, मुंग, मसूर और एरंडेल आदि का समावेश था। [12]

अनाज बडी–बडी ढोलीयोंमे या मिट्टी के बडे हंडो में रखा जाता था।

बागायती खेती में गन्ना, मुख्य उत्पादन था। गन्ने का रस निकाल कर गुड बनाया जाता था। करीब चार हजार मण गुड वैनगंगा जिले मे तयार किया जाता था। जुलै महिने मे पान की बेले लगाकर पान का उत्पादन लिया जाता था। एक साल बाद पान के पत्ते तयार हो जाते थे। पान के बगीचे रामटेक तहसील में बडे पैमाने पर थे। हलदी, केला, तंबाखू और अल्प प्रमाण में अफिम का उत्पादन लिया जाता था। [13]

तिलहन, अलसी और एरंडेल के उत्पादन से तेल निकाला जाता था। खरीप और रब्बी के मौसम में कपास उगाया जाता था। कपास से धागा निकालने का काम किसान स्त्रिया करती थी। गेहूँ के साथ चना, कपास के साथ तुअर, ज्वार, गन्ना, हलदी आदी उगाये जाते थे। धान और बागायती उत्पादकों को खाद दी जाती थी। किसान घर में ही खाद बनाते थे या गडरियों से खरीदते थे। गडरिये अपने भेड़–बकरियों को रात में खेतो में रखते थे। 40 भेडे एक महिना खेत मे रखने पर गडरीये को एक खंडी अनाज दिया जाता था। जंगल से लकडी तोडने के लिये घरकारी नामक कर देना होता था। प्रत्येक गाँव की सरहद को निश्चित करने के लिये पत्थर रखे जाते थे। [14]

उद्योग व्यवसाय नागपूर के मुख्य उद्योग और उनकी संख्या इस तरह थी। 429 मिस्त्री (घर बनाने का कार्य), 79 पत्थर काटने वाले, 223 बढई, 265 लोहार, 271 कुम्हार, जाडा कपडा बुननेवाले 114, 75 बुरड, 294–कसार, 4 धातू पॉलिश करनेवाले, 356 सुनार, 189 कपास से बीज निकालनेवाले, 1008 धागा निकालने वाले, 4162 सुती कपडा बुनने वाले, 32 ब्लॅकेट बुननेवाले, 367 कपडा रंगने वाले, 14 रेशमी वस्त्र बुननेवाले, 286 दर्जी, 198 चुडी बनानेवाले, 1594 तेल निकालनेवाले, 284 चमार, 108 चमडे का काम करनेवाले, 78 हलवाई, 14 बंदूक की दारू तयार करने वाले ऐसे अलग–अलग व्यवसायी लोक नागपूर भोसले शासन काल में थे। [15]

कपडा उद्योग कपडा नागपूर और जिले में बुना जाता था। अच्छे दर्जे के दुपट्टे पवनी और चांदा में बुने जाते थे। उनकी किंमत 30 रूपये तक होती थी। मुख्य रूपसे कोष्टी (हिंदू) और मोमीन (मुसलमान) उन्हे बनाते थे। उत्तम कपडा 20 रूपये और साधारण कपडा 10 रूपये से 10 आने तक मिलता था। साडीयाँ और धोतीयाँ नागपूर और उमरेड में बनाई जाती थी। वे 5 रूपये से 40 रूपये तक मिलती थी। धोती की जोडी 1 रूपये से लेकर पच्चीस रूपये तक मिलती थी। चोली का कपडा या सिल्क की किनारी जॅकेट दो आने से 6 रूपये तक मिलता था। खादी और दुसरा कपडा भी तयार किया जाता था। दुपट्टे और पगडी हर रंग के होते थे। लाल रंग का कपडा महंगा होता था। स्त्रियों के कपडे गहरे निले, हलके निले, लाल और हरे रंग के होते थे।

रेशमी, सुती और तसर के कपडे का उत्पादन होता था। मोहाडी और खापा में भी कपडा तयार होता था। 1803 में पडे अकाल के समय पैठण, जैणाबाद, बु-हाणपूर आदी जगहोंसे बुनकरों को लाकर रघुजी द्वितीय ने नागपूर में बसाया था। [16]

व्यापार धातू के बर्तन, तांबे के बर्तन भंडारा, रतनपुर (छत्तीसगड की राजधानी) और चांदा के कसार तयार करते थे। उनकी बिक्री पुरे देश मे होती थी। नागपूर में नमक, सोरा, गंधक, धातू, नारियल, मसाले और परदेस में तैयार कपडा आयात होता था। वह नागपूर प्रांत के दुसरे भागो में भेजा जाता था। बंजारा लोक कोकण और बरार से नमक लाकर नागपूर और देवगड में बेचते थे। पूर्व के सागर किनारे से नमक की बिक्री छत्तीगड और चांदा प्रदेश में होती थी। मिर्जापूर से शाल, कच्चा रेशम, रेशम का कपडा, ढाका से सब प्रकार की मलमल, छिंट का कपडा, शक्कर, नील, मसाले के पदार्थ, सोरा आदी की आयात की जाती थी। बुंदेलखंड से लाल खजुर, शक्कर, गंधक, आदी आयात होता था। युरोप, चीन, मुंबई से मोती, नमक, चंदन की लकडी, सेंट, मसाले, औषधी द्रव्य, पूर्ण और औरंगाबाद से सोने–चांदी और दुसरे प्रकार की वस्तुएँ नागपूर राज्य में मंगाई जाती थी।

नागपूर राज्य से कपडा, कच्चा कपास, अनाज और लाख की छडीयाँ निर्यात की जाती थी। नागपूर की साडीयाँ और धोतीयाँ पुरे भारत में प्रसिद्ध थी। अमरावती के व्यापारी कपास बेचने हेतू नागपुरी रूपया माँगते थे। पूणे के रूपये की किमत नागपूरी रूपये से अधिक थी। कपडे के व्यापारी कारखाने से कपडा खरीदते थे। यह व्यापारी जैन होते थे और उनसे पूणे और पंढरपूर के व्यापारी कपडे खरीदते थे।

अंतर्गत व्यापार मराठा व्यापारियों के हाथ था। बैलगाडीयों द्वारा वस्तूएँ लाई–ले जाई जाती थी। नागपूर, गढा–मंडला, सिवनी और होशंगाबाद तक माल भरकर बैलगाडीयाँ जाती थी। 1825 में निम्नलिखित वस्तुएँ नागपूर में आयात की गयी। 20 थान कपडा, 333 रूमाल, 340 थान फुलोंवाली मलमल, 50 थान सादी मलमल, 165 लंबा कपडा, 200 तुकडे भिन्न प्रकार का छिंट का कपडा, चाकू, छुरीयाँ, काच के बर्तन, छोटे आईने युरोपसे नागपूर आयात किये गयो। [17] 1825 में 42 हजार रूपये की शक्कर नागपूर में आयात की गयी। 45 हजार रूपये का नारीयल पूर्वसमुद्र किनारे से नागपूर आयात किया गया।

गुड और अनाज बडे पैमाने पर नागपूर प्रांत से निर्यात किया जाता था। 1825 में 750 हजार रूपये के कपडे की निर्यात दुसरे बाजीराव पेशवा को बिठूर (उत्तर प्रदेश) की गयी। 350 हजार रूपये का कपडा अमरावती और पुणे में, 50 हजार का कपडा इंदूर में, 100 हजार रूपये का कपडा जबलपूर और सागर में, 75 हजार रूपये का कपडा हैद्राबाद में भेजा गया। कपडे में साडी, पगडी, धोतरजोडी, दुपट्टा, रूमाल आदी की निर्यात होती थीं। [18]

रघुजी द्वितीय और अप्पासाहेब भोसले के शासन काल मे व्याज दर उसे 4 टका था। सावकारों की पेढीयाँ कलकत्ता, मुंबई, जयपूर, हैंद्राबाद आदी जगहों पर थी। पेशवाई के पतन की पश्चात (1818) नागपूर प्रांत में कपडा व्यवसाय में प्रगती रूक गयी। पेशवा काल में नागपूर प्रांत से पुणे 12 से 14 लाख का कपडा भेजा जाता था। 1826 मे पुणे में 3 लाख से ज्यादा का कपडा भेजा नहीं गया।

1818 से 1854 के बीच व्यापार, वाणिज्य में निर्माण हुए दोषों को दूर किया गया। सब जगह शांती प्रस्थापित होने से व्यापारी, दुकानदार, सावकार ओर किसान वर्ग में सुरक्षितता की भावना निर्माण हुई। [19]

टकसाल नागपूर में गोंड शासनकाल के पूर्व लोग विनिमय के साधन के रूप में कौडिंयाँ और चांदी के तुकडों का प्रयोग करते थे। नागपूर के गोंड राजा चांदसुलतान को दिल्ली के बादशाहने टकसाल बनाने की अनुमती दी। चांदसुलतान के रूपये में 86 रत्तीमेसे 82 रत्ती शुद्ध चांदी और 4 रत्ती मिश्र धातू होती थी। आद्य रघूजी ने उसी सिक्के को चलाया, केवल उसने मिश्र धातू का प्रमाण एक रत्ती बढाया। रूपये का वजन 86 रत्ती ही था। [20] भोसले शासन कासल में नागपूर के अतीरिक्त चांदा, हिंगणघाट, सोहागपूर, बोरी–पवनी आदी जगहोंपर टकसाले थी।

जानोजीने (1755–1772) मे रूपये का मुल्य कम कर 85 रत्ती किया। मिश्रधातू का प्रमाण एक रत्ती से बढाया। 79+6 =85 रत्ती को रूपया रखा। मुधोजीने (1772–1788) कुछ साल तक वहीं रूपया कायम रखा। बाद में एक रूपये का वजन 83.½ रत्ती किया। उसमें 76.½ रत्ती शुद्ध चांदी और 7 रत्ती मिर धातू होती थी। दुसरे रघुजी के शासनकाल में (1778–1816) रूपये का वजन ½ रत्ती से कम हुआ। याने एक रूपया 83 रत्ती का हुआ। बाद में उसने रूपये में मिश्र धातू का प्रमाण एक रत्ती बढाया और उसके पश्चात दो रत्ती से याने 74+9 =83 ऐसा प्रमाण रूपये में

था। [21]

अप्पासाहेब भोसले के काल में नागपूरी रूपयों का अवमुल्यन हुआ इसलिये ब्रिटिशों का ध्यान टकसाल की और गया। ब्रिटिशों ने नागपूर राज्य की सत्ता अपने नियंत्रण में ली तब गोर्डन ने नागपूरी रूपये के वजन, किंमत में प्रमाणबद्धता स्थापित की। वह खुद टकसाल का अधिकारी था। वह लिखता है की, नागपूरी प्रमाण रूपये को जरीपटका रूपया कहा जाता है। उसका वजन 83 रत्ती हेाकर उसमें 72 रत्ती शुद्ध चांदी ओर 11 रत्ती मिश्र धातू है। भोसले काल में 1) रघुजी के सिक्के 2) अंगू लाला के सिक्के 3) रामजी तात्या के सिक्के 4) मनभट के सिक्के 5) शिवराम के सिक्के 6) चांदा टकसाल के सिक्के 7) जरीपटका के सिक्के प्रचलित थे। [22]

धातु का मुल्य भोसले काल में सोने की किंमत 17 से 20 रूपये तोला थी। शुद्ध चांदी की किंमत एक तोले के पिछे 1 रू. 5 आने 4 पैसे थी। चांदी के मुल्यपर दुसरी धातू का मुल्य निश्चित किया जाता था। नागपूर में 10–12 हजार की चांदी की लड बाजार में मील जाती थी। एक मण तांबे की किंमत 16 से 20 रूपये थी। [23]

निष्कर्ष साधारण तौर पर भोसले काल में व्यापार प्रगती की ओर अग्रेसर था। परंतु कुछ कारण व्यापार की प्रगती में बाधक थे। नागपूर प्रांत भौगोलिक दृष्टी से कठीण था और व्यापार तथा अवागमण के साधन अपर्याप्त थे। इसका परिणाम आयात तथा निर्यात दोनो पर हेाता था। रघुजी द्वितीय और अन्य भोसले शासकों ने अनेक बार जबरदस्ती अमीर, साहुकार और व्यापारीयों से कर्जा लिया। इसमें से बहुत ही थोडी रकम लौटाई जाती थी ओर बाकी डुब जाती थी। इसका परिणाम यह हुआ की व्यापारी अपनी ज्यादातर संपत्ती व्यापार में लगाने के बजाय छिपाकर रखना पसंद करते थे, ताकी शासको की नजर उस पर न जाएँ। इससे व्यापार व्यवसाय को नुकसान हुआ। अनाज के मुख्य निर्यात पर भी कुछ बंधन डाले गये थे। व्यापार पर एकाधिकार ओर वाहतूक संबधी नियम सदोष थे। इनसे व्यापार की उन्नती में अडचणे निर्माण हुई।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पेशवा दप्तर भाग 20, लेख 158, पृष्ठ 152.
2. पेशवा दप्तर भाग 20, लेख 209 पृष्ठ 203.
3. शेजवलकर, त्र्य.श.नागपूर अफेअर्स भाग–1, डेक्कन कॉलेज पुणे, 1954, नं. 189 पृष्ठ 202.
4. अंधारे भा.रा.दुसरे रघुजी भोसले, विश्वभारती प्रकाशन, नागपूर 2002 पृष्ठ क्र 120.
5. Jenkins Richard. Report of the territories of the Raja of Nagpur - 1827 Govt. Press Nagpur, 1827, 62-63.
6. अंधारे भा.रा. अखेरचा सेनासाहेब सुभा, तिसरे रघुजी भोसले, विश्वभारती प्रकाशन नागपूर 2003 पृष्ठ क्र. 111.
7. Captain Ramsay G. Report on the Nagpur state Down to 1845, Asst. Resident Written in January 1845.
8. Sinha N.N. Selection from the Nagpur Residency Records Vol. V, Govt. Press Nagpur, 1957, 188.
9. अंधारे भा.रा. अखेरचा सेनासाहेब सुभा, तिसरे रघुजी भोसले, विश्वभारती प्रकाशन नागपूर 2003 पृष्ठ क्र.115&116.
10. The Escheat of the Nagpur State the arrangements for the administration of the New Province and the Settlement of teh affairs of Bhonsla family (Govt. Pub.), 1853-54, 78.
    और अंधारे भा.रा. अखेरचा सेनासाहेब सुभा, तिसरे रघुजी भोसले, विश्वभारती प्रकाशन नागपूर 2003 पृष्ठ क्र. 118–119
11. Jenkins Richard. Report of the territories of the Raja of Nagpur - 1827 Govt. Press Nagpur, 1925, 25.
12. Jenkins Richard. Report of the territories of the Raja of Nagpur - 1827 Govt. Press Nagpur, 1827, 51.
13. 1अंधारे भा.रा. अखेरचा सेनासाहेब सुभा, तिसरे रघुजी भोसले, विश्वभारती प्रकाशन नागपूर 2003 पृष्ठ क्र. 121.
14. 1अंधारे भा.रा. अखेरचा सेनासाहेब सुभा, तिसरे रघुजी भोसले, विश्वभारती प्रकाशन नागपूर 2003 पृष्ठ क्र. 122.
15. Jenkins Richard. Report of the territories of the Raja of Nagpur - 1827 Govt. Press Nagpur, 1827, 58-59.
16. Jenkins Richard. Report of the territories of the Raja of Nagpur - 1827 Govt. Press Nagpur, 1827, 61-62.
17. Jenkins Richard- Report of the territories of the Raja of Nagpur - 1827 Govt. Press Nagpur, 1827, 66.
18. अंधारे भा.रा. अखेरचा सेनासाहेब सुभा, तिसरे रघुजी भोसले, विश्वभारती प्रकाशन नागपूर 2003 पृष्ठ क्र. 125.
19. Jenkins Richard. Report of the territories of the Raja of Nagpur - 1827 Govt. Press Nagpur, 1827, 70.
20. Sinha N.N. Selection from the Nagpur Residency Records Govt. Press Nagpur 1957; 5:71.
21. Sinha N.N. Selection from the Nagpur Residency Records, Govt. Press Nagpur 1957; 5:73.
22. अंधारे भा.रा. अखेरचा सेनासाहेब सुभा, तिसरे रघुजी भोसले, विश्वभारती प्रकाशन नागपूर 2003 पृष्ठ क्र. 132.
23. Sinha N.N. Selection from the Nagpur Residency Records, Govt. Press Nagpur 1957; 5:78-79.